Vol 2 Issue 9 March 2013

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 9, March. 2013
ISSN:-2231-5063
Available online at www.aygrt.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

GRT

नयी कहानी : सांस्कृतिक संक्रमण विसंगति एवं विडम्बना

SMRITI SINGH

Lecturer, Agrawal College, Jaipur.

सारांशः

व्यक्ति को महत्ता और अधिकार चेतना प्रदान करने वाले लोकतंत्र के बीच भारत की विकास प्रक्रिया प्रारंभ हुई। आर्थिक विकास के साथ–साथ सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश का निर्माण हुआ। राष्ट्रीय क्षितिज पर होने वाले परिवर्तनों एवं तमाम संक्रमणों का इस युग के व्यक्ति ने सामना किया। व्यक्ति ने मरणासन्न पुरानी दुनिया के प्रति मोह के कारण परम्परावादी प्रवृत्तियों को ही जन्म नहीं दिया है बल्कि उससे आगे बढ़कर मानव की सृजनात्मक साहसिक प्रवृत्ति के लिए अनन्त संभावनाएं भी प्रस्तुत की।

प्रस्तावना :–

स्वतन्त्रता के बाद शेष विश्व के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की होड़ में हमने आर्थिक विकास की ओर अपना पूरा जोर लगा दिया और सामाजिक व सांस्कृतिक मुद्दों को हाशिये पर रख दिया। सांस्कृतिक प्रश्नों और राष्ट्र निर्माण की सांस्कृतिक सामाजिक संभावनाओं के प्रति संवेदनहीनता के दूरगामी परिणाम हुए। भारत की सांस्कृतिक धरोहर को नए आग्रहों से जोड़ने वाली पारम्परिक संस्थाएं विघटित होती गई। इनके साथ ही लोक संस्कृतियों का भी तेजी से विघटन हुआ। ऐसी स्थिति में जनसाधारण अपने को शून्य की स्थिति में पाता है, जो पुरानी व्यवस्थाओं और सुरक्षाओं के अभाव से पैदा हुई थी। अधिकांश जनता इस पुराने के बीच जो टूट नया और उस नये के बीच जो जन्म लेने में अक्षम है, त्रिशंकु की स्थिति में थी।

भौतिकवादी दृष्टि की प्रधानता के कारण व्यक्ति के विचार, मूल्यों को अर्थ केन्द्रित बनाने लगे। धर्मनिष्ठ समाज के आध्यात्मिक मूल्य आधुनिक तर्कजाल में उखड़ने लगे। आधुनिक वैज्ञानिक तर्क सम्मत मूल्य स्थितियाँ अधपके–अधकचरे रूप में जनजीवन को सम्मोहित करती रही। परिणामस्वरूप अर्धमिश्रित सामाजिक मूल्य चेतना के कारण सम्पूर्ण समाज लड़खड़ाने लगा। ''संक्रमण काल में जब पुरानी आस्थाएँ तेजी से टूट रही हैं और नई आस्थाएँ बनी नहीं हैं तो मूल्यहीनता या नैतिक अराजकता की स्थिति पैदा होती है।''(1)

यह एक प्रकार का संकट था, जो स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद गहराता चला गया। इस संकटग्रस्त परिस्थिति का चित्रण नयी कहानी में बढ़ी शिद्दत से किया। लोकतंत्र और विकास परियोजना के माध्यम से क्रांतिकारी परिवर्तन के दिवास्वप्न द्वितीय चुनाव से पूर्व तक तो जनजीवन को लुभाते रहे किन्तु द्वितीय चुनाव के आते–आते सामाजिक जीवन में परिव्याप्त असंगतियों ने जनता का मोह भंग कर दिया। समाज में एक नव धनवाद वर्ग पैदा हुआ। यही वर्ग नेताओं का सलाहकार और परियोजन के प्रारूप तथा कार्यरूप का निर्णायक बना एवं पूंजीवादी वर्ग से सांठ–गांठ कर दिनोंदिन उन्नति करता रहा। इस वर्ग में पढ़े–लिखे ऑफिसर और इन्जीनियर थे, इन्होंने सरकारी खजाने से अपना निजी खजाना भरा। इसी नव बुर्जुआ वर्ग की एकाधिकार शक्ति में कैद जन चेतना अंतर्विरोध और असमंजस में भटकती रही। कमलेश्वर की 'जोखिम' शीर्षक कहानी में एक ऐसे ही आक्रोशमय व्यक्ति का चेहरा सामने आता है –

''मैं कहाँ से काम शुरू करूं या संघर्ष शुरू करूं ? कहाँ से ? कहाँ बताईये जाकर काम करने लगूं सड़क खोदने लगूं या अस्पताल में जाकर मरीजों की खून सनी पट्टियाँ साफ करने लगूं या......... गोदी पर जाकर गांठे उठाने लगूं या लड़कियों के लिए आदमी तलाश करके लाने लगूं या शराब पहुंचाने लगूं या नारीमन पाइंट पर खड़े होकर दोनों हाथ आसमान की तरफ उठाकर चीख पड़ूं क्या करूं ?''(2)

आजादी के बाद आश्वासनों का खोखलापन, बढ़ता भ्रष्टाचार दरिद्रता, बेरोजगारी और भूख को सहता मानव मन विपन्नता से आक्रांत रहा। देश का समस्त परियोजन भ्रष्टाचारी, स्वार्थपरक, नौकरशाही और राजनैतिक विषय तंत्र में उलझकर रह गया। अनेक विसंगत स्थितियों और जटिल समस्याओं में उलझे मानव मूल्यों, राष्ट्रीय मूल्यों और नैतिक मूल्यों के प्रश्न लड़खड़ा उठे। ''राजनीति और अर्थतंत्र के जाल में उलझी उसकी पीड़ा कुलबुलाती रही। उसकी स्थिति यह थी कि करघे है तो सूत नहीं है। खाद है तो बीज नहीं है, कच्चा माल है तो ईंधन नहीं है, ईंधन है तो डिब्बे नहीं है, डिब्बे है तो रेलवे लाईन मजबूत नहीं है, मतलब यह है कि जिस आर्थिक क्रान्ति की पूरी संभावना थी, वह नहीं हुई।''(3)

आजादी के बाद देश के युवा वर्ग में नैराश्य भावना दिखाई देती है। सन् 50 के आसपास स्थिति बिल्कुल साफ हो गई थी, बेरोजगारी की समस्या डिग्रियों के साथ युवाओं का भटकता भविष्य, उन्हें निराशा तथा अवसाद के भाव से भर रहा था। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की 'लड़ाई', रघुवीर सहाय की 'ग्यारवी कहानी' और 'रास्ता इधर से है', जैसी कहानियाँ व्यवस्था से संघर्ष करते हुए व्यक्ति की नैराश्य भावना को रेखांकित करती है।

पुरानी आस्थाओं के टूटने और नयी आस्थाओं के प्रतिष्ठित नहीं हो पाने की स्थिति में द्वंदग्रस्त संक्रमणशील मानसिकता को जन्म दिया। यह एक ऐसा संकट बिन्दु था, जो व्यक्ति के चारों ओर फैलता जा रहा था और इस विकट और विकराल फैलाव से निरंतर जूझ रहा था,

Title : *नयी कहानी : सांस्कृतिक संक्रमण विसंगति एवं विडम्बना*
Source:Golden Research Thoughts [2231-5063] SMRITI SINGH yr:2013 vol:2 iss:9

टूट रहा था और उसे झेलने को विवश था। आजादी के दस वर्षों तक भी जनता केवल मामूली सुबह ही देख पायी। स्वतन्त्रता पूर्व की एकलक्षीय संघर्ष स्थित अब समाप्त हो चुकी थी और आपद्धर्म के रूप में नैतिक मूल्य स्खलित होकर नित नए रूपकारों में उभर रहे थे। मोहभंग के इस कटु आघात ने धुरीहीनता को जन्म दिया। जीवन में उभरती व्यावसायिक वृत्ति, स्वार्थपरता, आत्मकेन्द्रित मूल्य एवं यांत्रिक परिवेश की अंधी दौड़ में व्यक्ति जीवन के बाह्‌य रूप की ओर आकर्षित होता रहा और उसकी भीतर संवेदनाएँ चुकती गयी।

''...........जनवादी क्रांति को पूर्ण करने का कार्य अभी अधूरा ही है। सामाजिक क्रांति का ही यह परिणाम है कि पुराने सामाजिक ढ़ांचे को बिना परिवर्तित किये देश के अन्दर आधुनिकता तकनीकी उपकरणों का प्रवेश झूठी और तारहीन आधुनिकता को जन्म दे रहा है, जिसका जोर बाहरी तड़क–भड़क और चमक–दमक पर ही है, आत्मा और मस्तिष्क के परिष्कार पर नहीं।''(4)

वस्तुतः नयी कहानी का समय अनेक परस्पर विरोधी संस्कृतियों का समय है। अनिश्चय और संक्रमण की संस्कृति से इस युग में पारंपरिक और नये सांस्कृतिक प्रतिमानों की द्वंद से समाज के सम्मुख नई चुनौतियां उत्पन्न हुईं। औद्योगीकरण के व्यापक प्रसार से दिन–प्रतिदिन नये–नये कस्बों और नगरों का जन्म हुआ। कृषि पर अत्यधिक भार व अन्य व्यवसायों के अभाव ने ग्रामीण जनों को नगरों की तरफ आकृष्ट किया। इस प्रकार गाँव की भोली भाली जनता भी नगरीय संस्कृति के संक्रमण से अछूती नहीं रही। ''आज के युग में जीवन बदला है, जैसे अनेक कालों में बदलता आया है किन्तु आज के जीवन का आधुनिक होना केवल नयी परिस्थितियों और वातावरण का नया होना नहीं है वरन् अनिवार्य भाव से अनेक विश्वासों, मूल्यों और भाव बोधों को छोड़ना है, जो सामन्तवाद या मध्यकाल की उपज थे और इस चेतना की स्वीकृति है, जो विज्ञान काल की देन है।''(5)

औद्योगिक सभ्यता के विकास ने भीड़ की संस्कृति को जीवित किया। आदमी भीड़ व कोलाहल में खोता जा रहा है, उसकी कोई पहचान नहीं बन पाती है। वह भीड़ के साथ भागता चला जाता है, पर उसके इर्द–गिर्द एक अपरिचय की दीवार खड़ी रहती है। नयी कहानी में महानगरों में बदलते मूल्यों के कारण अकेलेपन की त्रासदी का चित्रण किया है। ज्ञानरंजन की कहानी 'फेंस के इधर उधर' में अकेलेपन एवं अलगाव का यह चित्रण पड़ौसियों के आपसी रिश्तों में दिखाई देता है।

वस्तुतः नवीन सभ्यता और संस्कृति से प्रभावित इस पीढ़ी ने पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टि से भी मूल्य संक्रमण का सामना किया। उषा प्रियवन्दा की 'वापसी', विजयमोहन की 'मुक्ति', ज्ञानरंजन की 'पिता', मनोहर श्याम जोशी की 'एक दुर्लभ व्यक्तित्व' आदि कहानियाँ पारिवारिक यथार्थ का अरागात्मक चेहरा प्रस्तुत करते हैं।(6)

आधुनिक युग के पुरूष और नारी दोनों की अस्मिता इतनी प्रबल होने लगी, जिससे पति पत्नी के जीवन में तनाव व अलगाव का कारण बने। स्त्री पुरूष की समानता तथा उनके उत्तरदायित्व एवं अधिकारों के एकमेल हो जाने के कारण दाम्पत्य संबंध उलझते गये, उनके तनाव के नए बिन्दु उभरने लगे। ''आज पति पत्नी दोनों ही एक–दूसरे से अनेक अपेक्षाएं रखते हैं। दोनों एक–दूसरे से भी तथा अपने दाम्पत्य जीवन से भी विभिन्न इच्छाओं की पूर्ति की अपेक्षा रखते हैं।''

पारिवारिक ढ़ांचा चरमराने से स्त्रियों की सोच में भी परिवर्तन हुआ। क्षण की सार्थकता, विकल्प की स्वतन्त्रता, व्यक्ति का एक अलग ईकाई के रूप में अधिक महत्त्व होना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और उससे संक्रान्ति का संकट हमें' राजा निरबंसिया' की 'चंदा' में तथा 'यही सच है' की 'दीपा' में दिखाई देता है।

वास्तव में इस युग में ''प्रत्येक व्यक्ति यह सच्चाई अनुभव करता रहा कि परम्परागत आदर्श उसे समाधान देने में असमर्थ है किन्तु स्थान पर प्रस्तुत किये जाने वाले मूल्य उनके पास नहीं थे।''(7)

इसी कारण वह उन नवीन मूल्यों के लिए संघर्षरत रहा, जो उचित ही है। इसी कारण उसकी द्विधाग्रस्त चेतना समस्त सामाजिक व्यवस्था एवं मूल्य परम्पराओं की जकड़न में आबद्ध रही, उसके व्यक्तित्व विश्वास और विचार मूल्य व्यवहार के स्तर पर खंड़–खंड़ हो गये हैं। यह मूल्यगत संक्रमण हमें सम्पूर्ण नयी कहानी में दृष्टिगोचर होता है।

1.स्वप्न और यथार्थ : आजादी की आधी सदी, पी॰सी॰ जोशी, पृ.134
2.राजेन्द्र यादव : कहानी स्वरूप और संवेदना, पृ. 107
3.नयी कहानी की भूमिका – कमलेश्वर, पृ. 164
4.स्वप्न और यथार्थ : आजादी की आधी सदी, पी॰सी॰ जोशी, पृ.134
5.आज का हिन्दी साहित्य–संवेदना और दृष्टि – रामदरश मिश्र पृ. 164
6.भारत में विवाह और कामकाजी महिलाएँ – डॉ॰ प्रमिला कपूर, पृ. 11–12
7.नयी कहानी : नए प्रश्न – डॉ॰ संतबख्श, पृ. 53

SMRITI SINGH
Lecturer, Agrawal College, Jaipur.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium   Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net